

ये लड़ाई पैसे के लिए नहीं थी, 6 करोड़ तो मुकदमेबाजी में ही खर्च हो गए!

चिकित्सीय लापरवाही के एक मामले में लगभग छह करोड़ रुपये का मुआवज़ा पाने वाले कुणाल साहा का कहना है कि उनकी लड़ाई कभी भी पैसे के लिए नहीं थी. अमरीका में रहने वाले भारतीय मूल के डॉक्टर साहा का कहना है कि ये लड़ाई भारत में चिकित्सीय लापरवाही के हालात के खिलाफ़ थी जिसके फ़ैसले से आने वाले समय में कई लोगों की जान बच सकेगी.

उन्होंने साल 1998 में अपनी पत्नी की भारत के एक अस्पताल में मौत होने के बाद उस अस्पताल पर लापरवाही का मुक़दमा किया था. गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में फ़ैसला देते हुए अस्पताल को आदेश दिया कि वो डॉक्टर साहा को करीब छह करोड़ रुपये बतौर मुआवज़ा दे.

अमरीका के ओहायो राज्य के कोलंबस शहर से बीबीसी के साथ खास बातचीत में डॉक्टर कुणाल साहा ने कहा, "मैं मुआवज़े की राशि को लेकर खुश नहीं हूँ क्योंकि ये लड़ाई कभी पैसे के लिए नहीं थी. ये लड़ाई भारत में चिकित्सीय लापरवाही के हालात के खिलाफ़ थी." मामला डॉक्टर साहा की पत्नी डॉक्टर अनुराधा साहा साल 1998 में भारत आई थीं जहां त्वचा से जुड़ी एक असाधारण बीमारी के लिए इलाज के लिए उन्हें कोलकाता के एडवांस मेडिकेयर रिसर्च इंस्टिट्यूट, एएमआरआई, अस्पताल में भर्ती कराया गया. एएमआरआई में इलाज के बाद अनुराधा साहा की हालत बिगड़ने पर उन्हें मुंबई के ब्रीच कैन्डी अस्पताल में स्थानांतरित किया गया था जहां टॉक्सिक एपिडर्मल नेक्रोलिसिस (एनइटी) से उनकी मौत हो गई.

पत्नी की मौत के बाद कुणाल साहा ने अस्पताल के खिलाफ़ लापरवाही का मुक़दमा किया था. "ये लड़ाई कभी पैसे के लिए नहीं थी. ये लड़ाई भारत में चिकित्सीय लापरवाही के हालात के खिलाफ़ थी. इस फ़ैसले का असर भारत की चिकित्सा प्रणाली पर पड़ेगा और इससे आने वाले समय में बहुत सी जानें बच सकेंगी." डॉक्टर कुणाल साहा साल 2009 में सुप्रीम कोर्ट ने एएसआरआई को मेडिकल लापरवाही का दोषी पाया था और इस मामले को नेशनल कंस्यूमर डिस्प्यूट रिज़ेसल कमीशन को रेफर किया गया था जिसने मुआवज़े की राशि 1.7 करोड़ तय की थी. लेकिन डॉक्टर साहा को नामंज़ूर थी और उन्होंने मुआवज़े की राशि बढ़ाने के लिए अदालत में अपील की थी.

डॉक्टर साहा ने बताया कि उन्होंने 77 करोड़ रुपये का दावा किया था और पिछले 15 साल में इस

लड़ाई को लड़ने के लिए उन्होंने खुद पांच-छह करोड़ रुपये खर्च किए हैं। सिस्टम को बदलने की ज़रूरत उन्होंने कहा, "आज से 15 साल पहले अनुराधा की मौत हुई थी लेकिन ऐसी और बहुत अनुराधा आज भी भारत में मर रही हैं। आज जो ये फैसला आया है इसका असर भारत की चिकित्सा प्रणाली पर पड़ेगा और इससे आने वाले समय में बहुत सी जानें बच सकेंगी।"

ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी में एड्स के एक बड़े रिसर्चर डॉक्टर कुणाल साहा ने एएमआरआई के तीन डॉक्टरों के खिलाफ़ मामले भी दर्ज करवाए थे जो उनकी पत्नी के इलाज से जुड़े हुए थे। इस मामले में 17 डॉक्टरों की अदालत में पेशी हुई थी। लेकिन इसके बावजूद वो कहते हैं कि वो डॉक्टरों के खिलाफ़ नहीं हैं।

डॉक्टर अनुराधा साहा साल 1998 में भारत आई थीं जहां त्वचा से जुड़ी एक असाधारण बीमारी में उनकी मौत हो गई थी। डॉक्टर साहा ने कहा, "मैं डॉक्टरों के खिलाफ़ नहीं हूं। मैं खुद भी डॉक्टर हूं और मेरे बहुत से दोस्त और परिवार में डॉक्टर हैं। लेकिन हमारे समाज में आज जैसे डॉक्टरी हो रही है, मेडिसिन एक व्यापार हो गया है, ये ठीक नहीं है।" उनका ये भी आरोप है कि भारत में पैसा देकर मेडिसिन की डिग्री खरीदी जा सकती है।

उन्होंने कहा, "मेरे पिता भी डॉक्टर थे। मैंने देखा था कि उन्हें कितनी इज्जत मिलती है। लेकिन आज ये इज्जत कहां हैं? मेडिसिन में जो शीर्ष पर हैं वो अपनी जानकारी और इल्म की वजह से नहीं बल्कि राजनीति करने और पैसा देने से बनते हैं। आज भारत में पैसा देकर एमबीबीएस की डिग्री भी खरीदी जा सकती है। ऐसे लोग कैसे डॉक्टर बनेंगे?" डॉक्टर साहा का कहना है कि इस सिस्टम को बंद करना पड़ेगा और इसके लिए अच्छे डॉक्टरों को सामने आना होगा। वे मानते हैं कि उनके मामले में दिए गए फैसले से डॉक्टरों में थोड़ा डर पैदा होगा जिससे इस तरह के हालात की रोकथाम में मदद मिलेगी। डॉक्टर कुणाल साहा का कहना है कि ये लड़ाई उनके लिए आसान नहीं रही है। लेकिन उन्होंने ऐसा किया क्योंकि ये काम एक पूरी पीढ़ी के लिए है और इंसान की जान बचाने के लिए है।

वो कहते हैं कि उनकी पत्नी उनके लिए आज भी ज़िंदा हैं। पेशे से बच्चों की डॉक्टर रहीं अनुराधा साहा की मौत के बाद से ही उनके पति मेडिकल लापरवाही के मामलों के खिलाफ़ अभियान चला रहे हैं। उन्होंने 'पीपल फ़ॉर बेटर ट्रीटमेंट' नाम की एक संस्था बनाई और मेडिकल लापरवाहियों के खिलाफ़ आवाज़ और बुलंद की। क्या अप्रवासी भारतीय या एनआरआई होने की वजह से उन्हें कुछ फ़ायदा हुआ? डॉक्टर साहा कहते हैं कि इस बात का फ़ायदा और नुकसान दोनों ही रहे। वे कहते हैं, "इन सालों में मुझे भारत के कई चक्कर लगाने पड़े। अपना काम छोड़कर कोई 50-60 बार भारत आना पड़ा

जो कि बहुत मुश्किल था. हां, लेकिन एनआरआई होने की वजह से मैं इतना खर्च कर सकता हूं जो एक आम भारतीय नहीं कर सकता था. इसलिए इस सिस्टम को बदलना ही होगा."

डॉ. कुणाल साहा द्वारा देश के आम मरीजों कि लिए बनाई गई वेब साईट <http://pbtindia.com/>

साभार-बीबीसी हिन्दी से

.